पाठ -७ सिलाई कला

वस्त्र हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। हम प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते हैं। वस्त्रों की सिलाई करके ही हम उन्हें पहन सकते हैं। वस्त्रों की सिलाई करना भी एक कला है। आधुनिक युग में नित नए परिधान बाजार में उपलब्ध हो रहे हैं, प्रत्येक गृहिणी चाहती है कि उसके परिवार के सदस्य नए-नए फैशन के कपड़े पहनें। इसके लिए उसे दर्जी के पास जाना पड़ता है, लेकिन कभी-कभी दर्जी के यहाँ से समय पर सिले वस्त्र नहीं मिल पाते हैं और सिलाई भी काफी महँगी होती है। सिलाई का ज्ञान होने पर गृहिणी घर पर ही अच्छे व सुंदर वस्त्र सिल सकती है। लड़के एवं लड़कियाँ दोनों सिलाई के ज्ञान से लाभान्वित होते हैं। घर में सिलाई करने से निम्नलिखित लाभ होते हैं:-

- नाप के अनुसार सिलाई
- मजबूत सिलाई
- आर्थिक लाभ
- बचे हुए कपड़े का सदुपयोग
- धनोपार्जन का साधन

किसी भी नए डिजाइन के कपड़े सिलने के लिए सही नाप लेने की जानकारी होनी चाहिए। जिससे सिलाई सुचारू रूप से हो सके तथा वस्त्र की फिटिंग बिलकुल ठीक आए। नाप लेने के बाद उसी आधार पर ड्राफ्ट बनाना चाहिए। ड्राफ्ट बनाते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

(1) आकृति में अंतर - प्रत्येक स्त्री-पुरुष की शारीरिक आकृति में अंतर होता है। ड्राफ्ट बनाते समय आकृति को ध्यान में रखकर ही वस्त्र काटना चाहिए।

(2) कपड़े में सिकुड़न - ड्राफ्ट बनाते समय यह भी देख लेना चाहिए कि वस्त्र सिकुड़ तो नहीं जाएगा। यदि सिकुड़न का भय हो तो कपड़े को काटने से दो घंटे पूर्व पानी में भिगोकर सुखा लेना चाहिए अन्यथा नाप से एक या दो इंच अधिक रखकर वस्त्र का ड्राफ्ट बनाना चाहिए।

(3) व्यक्ति की रुचि का ध्यान रखना - वस्त्र को सिलते समय व्यक्ति की रुचि का भी ध्यान रखना चाहिए। कुछ व्यक्ति ढीले कपड़े और कुछ व्यक्ति चुस्त कपड़े पहनना पसंद करते हैं।

(4) कागज के ड्राफ्ट द्वारा वस्त्रों पर ड्राफ्टिंग करना - कागज की ड्राफ्टिंग करने के उपरांत इसे वस्त्र पर रखकर इससे कुछ अधिक कपड़ा छोड़कर निशान लगाना चाहिए, जिससे कपड़े को बाद में आवश्यकतानुसार ढीला करने में सुविधा रहे।

पेटीकोट काटना व सिलना

पेटीकोट दो तरह से सिले जाते है- सादा पेटीकोट एवं कलीदार पेटीकोट।

आइए हम लोग चार कली का पेटीकोट काटना सीखें। पेटीकोट सिलने से पूर्व तीन नाप लेनी चाहिए-

लंबाई, कमर और घेरा। कपड़ा दो तह करके ड्रॉफ्ट बनाएँ।

निशान लगाने की विधि

कपड़े की लंबाई या चैड़ाई से 90 सेमी0 कपड़ा नेफा के लिए निकाल लें। फिर लंबाई से दोहरा करके निशान लगाएँ।

0-1 पूरी लंबाई = (100 सेमी0) जितना कपड़ा घेर में मोड़ने से कम होगा उतना नेफा लगकर बराबर हो जाएगा।

0-2 कमर का 1/4 +2 सेमी0 (20 सेमी0)

3-4 = 0 से 1

4-5 = 0-2 = (20 सेमी0)

5-1 = 2-3

2-5 तिरछी रेखा

6-7 और 9 से 8 शेप दें नेफा की पट्टी।

1-2 कमर का 72 सेमी0

2-4 नेफा की चैड़ाई 5 सेमी0 (10 सेमी0 निकाली पट्टी मोड़ लें)

1-3 = 2-4

3-4 = 1-2

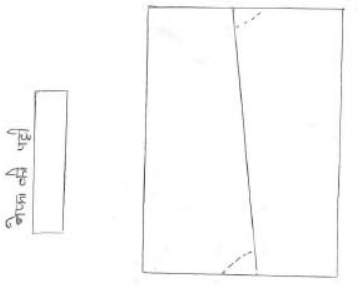

कपड़े की आवश्यक मात्रा का अनुमान लगाना

छोटे अर्ज के कपड़े की मात्रा जानने के लिए घेर की लंबाई में मोड़ के लिए 8 सेमी0 जोड़िए। इस प्रकार कपड़े की आवश्यक मात्रा = घेर की 2 लंबाई + घेर के लिए 2 मोड़ $ चोली की लंबाई +आस्तीन की लंबाई तथा आस्तीन की मोहरी का मोड़।

यदि कपड़े का अर्ज 90 सेमी0 है और घेर की चैड़ाई 46 है तो अर्ज में घेर बन जाएगा। अतः घेर की एक लंबाई ही चाहिए। यदि फ्रॉक में झालर लगाना है तो और अधिक कपड़े

की आवश्यकता होगी।

लेडीज कुर्ता

नाप -

लंबाई - 102 सेमी0, चेस्ट - 82 सेमी0

कंधा - 34 सेमी0, कमर - 80 सेमी0

आस्तीन - 15 सेमी0 (इच्छानुसार)

आस्तीन की मोहरी - 22 सेमी0

1-2 पूरी लंबाई + 3 सेमी0 मोड़ने के लिए (105 सेमी0)

1-3 कंधे का 1/2 (17 सेमी0)

1-7 चेस्ट का 1/4 - 2 सेमी0 (18.5 सेमी0)

3-5 = 1-7

7-4 चेस्ट का 124 + 4 सेमी0 (24.5 सेमी0)

1-8 = कमर तक की लंबाई 34 सेमी0

8-10 कमर का 1/4 = (20 सेमी0)

3-9 = 35 सेमी. (या इच्छानुसार)

1-12 चेस्ट का 1/12 (6.5 सेमी0)

1-13 गले के पीछे का शेप 3 सेमी0

1-14 चेस्ट का 126 (14 सेमी0)

11-6 = 6-5

6-15 = 11/2 सेमी0

11-6, 6 से 4 पीछे मुड्ढे की शेप

11-15, 15 से 4 सामने मुड्ढे की शेप

4-10, 10-9 साइड की शेप

9-0 = 2 सेमी0

9- ग = 3 सेमी0

0- ग = शेप देकर मिलाएँ।

8 से 10 कमर का 1/4 (20 सेमी0) इस लाइन पर समान दूरियों पर दो डार्ट बनाने के लिए चिह्न लगाए गए हैं। यह कमर से 6 सेमी. ऊपर और नीचे होंगे।

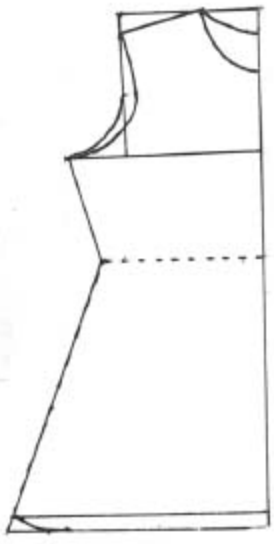

कुर्ता काटने की विधि

आस्तीन

1-2 आस्तीन की लंबाई + 2 सेमी0 मोड़ने के लिए (17 सेमी0)

1-3 चेस्ट का 1/4 - 2 सेमी0 (18.5 सेमी0)

4-5 = 2-6 = 2 सेमी0 (इच्छानुसार)

6-10 मोहरी का 1/2 (11 सेमी0)

7-9 तिरछी लाइन

7-8 = 7 - 1 का 1/3

1-9 = 1-7 का 1/3

7-8, 8-1 पीछे के मुड्ढे की शेप (चित्रानुसार)

7-9, 9-1 सामने की शेप

7-10 तिरछी लाइन। चित्र के अनुसार गला बनाइए।

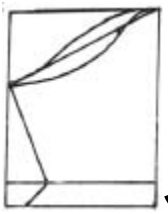

आस्तीन काटने की विधि

गले की नई डिजाईनें

सलवार

नाप -

लंबाई - 84 सेमी0

आसन - 30 सेमी0

सीट - 92 सेमी0

मोहरी - 40 सेमी0 (इच्छानुसार)

1-2 पूरी लंबाई + 5 सेमी0 नेफा = 89 सेमी0

7-8 = 1-2

1-3 = सीट का 1/4 + 2 सेमी0

(कंुदा की चैड़ाई = 25 सेमी0)

4-5 = 1-3

3-6 = आसन + नेफा (35 सेमी0)

2-4 = 3-6

2-6 तिरछी लाइन

2-7 = मोहरी का 1/2 (20 सेमी0)

1-8 = 2-7

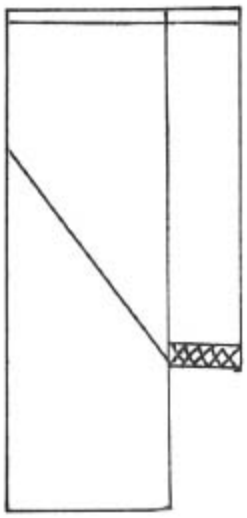

सलवार काटने की विधि

सलवार काटने की विधि

कपड़े की लंबाई में से 5 सेमी0 चैड़ी पट्टी काटिए। यह मोहरी के अंदर की ओर लगेगी। अब नेफे की नाप रखकर सलवार की लंबाई के बराबर कपड़ा काटकर अलग करिए। इसमें से दो पायचांे के लिए 36 सेमी0 चैड़े दो टुकड़े फाड़ लीजिए। चित्र में इनको 1, 11, 12 व 5 और 3, 14, 13, और 6 से प्रदर्शित किया गया है।

अब जो कपड़ा बचा है उसकी लंबाई = 1 सलवार की तैयार लंबाई + नेफे का मोड़ + आसन तथा नेफा, इस कपड़े को चित्र में 1, 2, 3, तथा 4 के अनुरूप दोहरा करके चैड़ाई में आधा कर लीजिए। अब 4 और 5 तथा 2 और 6 को आसन की लंबाई के बराबर नापकर (दोनों ओर नेफा जोड़ते हुए) निशान लगाइए। 5 तथा 6 को जोड़ दंे।

अब 1, 2, 6, 5, तथा 3, 4, 5, 6 दो कुंदे बन गए। इनको काट लीजिए। चित्र के अनुसार कुंदों को पायंचो से जोड़ो और सिलाई करें।

सिलाई मशीन

हाथ से वस्त्र सिलने में काफी समय लगता है। सिलाई मशीन बहुत महत्त्वपूर्ण है। कम समय में ही अच्छी व सुंदर पोशाकें सिलाई मशीन की सहायता से सिली जा सकती है।

आजकल कई डिजाइनों की सिलाई मशीन बाजारों में उपलब्ध है। इन मशीनों से साधारण सिलाई ही नहीं वरन कढ़ाई व पुरानें वस्त्रों का रफू आदि भी किया जाता है।

सिलाई मशीन की देखभाल

सिलाई की मशीन एक आवश्यक उपकरण है। मशीन की देखभाल करना आवश्यक है। देखभाल के साथ-साथ उसका उपयोग भी ठीक ढंग से होना चाहिए। मशीन की देखभाल के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

- मशीन को धूल एवं मिट्टी से बचाइए। जब यह प्रयोग में न हो तो इसे ढक कर रखना चाहिए।
- दिन-प्रतिदिन की सफाई के अतिरिक्त प्रतिवर्ष मशीन को एक बार खोलकर उसके विभिन्न पुर्जों को मिट्टी के तेल से साफ करना चाहिए। इससे मशीन हल्की चलती है।
- प्रति सप्ताह या दो सप्ताह पश्चात मशीन में तेल (मशीन का) देना चाहिए अन्यथा पुर्जे घिसने लगते हैं। मशीन पर संकेत बना होता है कि तेल कहाँ-कहाँ डाला जाए।
- तेल डालते समय निडिल बार को ऊँचा कर लेना चाहिए।

विभिन्न वस्त्रों के लिए कपड़ों का चुनाव

वस्त्र प्रमुख रूप से तीन प्रकार के होते हैं -

(1) सूती (2) रेशमी (3) ऊनी

सूती वस्त्र: बाजार में निम्नलिखित प्रकार के सूती वस्त्र मिलते हैं-

मारकीन या लट्ठा-यह मोटे किस्म का कपड़ा होता है। यह चादर, रजाई का गिलाफ तथा पेटीकोट आदि बनाने के काम में आता है।

दुसूती-यह सफेद व रंगीन दोनों प्रकार का होता है। इस कपड़े से अधिकतर चादरें, पर्दे एवं मेजपोश आदि बनाए जाते हैं। इस कपड़े में क्रॉस स्टिच की कढ़ाई सरलता से हो जाती है।

मलमल-यह वस्त्र अत्यंत महीन होता है। यह सफेद और रंगीन दोनों प्रकार का होता है। इससे ब्लाउज, दुपट्टे, रूमाल, कुर्ते आदि बनाए जाते हैं।

जीन्स का कपड़ा-यह मोटा एवं टिकाऊ होता है। जीन्स का कपड़ा अनेक रंगों में मिलता है।

जैसे - सफेद, नीली, खाकी आदि। इससे पैंट, नेकर व कवर आदि बनाए जाते हैं।

रेशमी वस्त्र-रेशमी वस्त्र रेशम के तंतुओं से बनते हैं। रेशम के तंतु एक प्रकार के कीड़े के ककून से प्राप्त होते हैं। रेशमी वस्त्र निम्नलिखित प्रकार के होते हैं:

सिल्क-सिल्क बहुत मुलायम होती है। इसके धागे दोनों तरफ एक से ही होते है। सिल्क से कुर्ते, ब्लाउज, साड़ी आदि बनाए जाते हैं।

साटन-साटन चिकनी तथा गफ होती है। यह सफेद तथा सभी रंगों में मिलती है। इसके गरारे, कुर्ते, लहंगा, सलवार आदि बनाए जाते हैं।

मखमल-यह साटन की तरह का कपड़ा होता है। अंतर केवल इतना है कि इसमें रोएँ होते हैं। यह देखने में सुंदर व महंगे होते हैं। इससे कुर्ता, रजाई, तकिया के गिलाफ आदि बनाए जाते हैं।

ऊनी वस्त्र-ऊनी वस्त्रों का प्रयोग शीत ऋतु में किया जाता है। ऊन हमें भेड़ों से प्राप्त होती है। वस्त्र की संरचना के अनुसार ऊनी वस्त्र निम्नलिखित प्रकार के होते हैं-

ट्वीड - यह मोटे गर्म धागों का बना होता है। यह काफी गर्म होता है। ट्वीड खुरदरा एवं मुलायम दोनों प्रकार का होता है। इससे कोट, ओवर कोट आदि बनाए जाते हैं।

सर्ज - यह देखने में सुंदर व कोमल होता है, यह कीमती होता है। इसके पैंट, कोट, सूट आदि बनाए जाते हैं।

अभ्यास

1.वस्तुनिष्ठ प्रश्न

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) वस्त्रों की सिलाई करना एक .....है।

(ख) मशीन में तेल डालते समय.....को ऊँचा कर लेना चाहिए।

(ग) रेशम के तंतु कीड़े के तंतु कीड़े के .....से प्राप्त होते हैं।

2. अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(क) वस्त्र कितने प्रकार के होते हैं? नाम लिखिए।

(ख) किस वस्त्र पर क्रास स्टिच की कढ़ाई सरलता से होती है ?

(ग) ऊनी वस्त्रों का प्रयोग किस ऋतु में किया जाता है ?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न

(क) घर पर सिलाई करने के किन्हीं चार लाभ लिखिए।

(ख) रेशमी एवं ऊनी वस्त्र कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) कपड़े पर ड्राफ्टिंग करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ख) सिलाई मशीन की देखभाल आप कैसे करेंगे ? विस्तार से लिखिए।

प्रोजेक्ट वर्क: -अपने नाप के कुर्ते की ड्राफ्टिंग करके सिलाई करें।